Page No. Date :

प्रोजेक्ट का नाम :

दोहरा अभिशाप नामक आत्मकथात्मक उपन्यास में कौसल्या बैसंत्रीका चरित्र .

भोसले विजय विलास

बैठक क्र. 535

सन. 2015-16

प्रस्तावना :-

कथानक संगठन का प्रमुख उद्देश्य पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन करना होता है। उपन्यासकार अपनी अनुभूति के आधारपर चरित्र्य - सृष्टी अंकित करता है। पात्रों के राग, विराग, संघर्ष, दया, करुणा तथा संवेदनशीलता आदि स्वाभाविक गुणों का तथा हिंसा, शत्रुता, क्रुरता, अनुदारता आदि दुर्गुणों का चित्रण यथार्थ के धरातलपर करता है।

कौसल्या बैसंत्री का 'दोहरा अभिषाप' दलित जीवन को अभिव्यक्त करने में सफल हुआ है। इसमें पात्रों की बहुलता है। कौसल्या जी ने कुल - मिलाकर पाच छह चरित्रों का संपूर्ण परिचय पाठकों से कराया है। परन्तु अन्य जितने भी गौण पात्र है वे अपने परिवेश तथा अपने समाज का प्रतिनिधित्व करने में अत्यंत सफल हुए है। लेखिका के यथार्थ जीवन की भावभूमि पर साकार हुए इस 'दोहरा अभिषाप' उपन्यास में चरित्र्य - सृष्टि सशक्त रुप में प्रस्तुत हुई है। कौसल्या जी ने आपने भोगे हुए यथार्थ को आत्मकथनात्मक उपन्यास के रुप में पाठकों के सामने रखा है। उन्होंने व्यक्तिवादी स्तरपर अन्य चरित्रों के आंतरिक द्वंद्वों का सूक्ष्म और विस्तृत वर्णन किया है।

Page No. Date :

जन्म परिचय :-
कौशल्या बैसंत्री का जन्म अनुसूचित जाति के दलित महार परिवार में 8 सितंबर 1926 को महाराष्ट्र के नागपुर के खलासी लाईने बस्ती मे हुआ।

बैसंत्रीजी का व्यक्तित्व :-
कौशल्या बैसंत्री का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे नारी मुक्ति आंदोलन चलाने वाली समाजसेविका कार्यकर्ता तथा लेखिका थी। उनका मराठी, हिंदी और अंग्रेजी तिनो भाषाओ पर बराबर अधिकार था। वे बी.ए तक पढ़ी-लिखी, सुशिक्षित, विद्वान नारी थी उन्होंने नारी की विविध समस्याओं के संबंधित अनेक आंदोलन एव अधिवेशन यशस्वीता से संपन्न किए थे। 'दोहरा अभिशाप' यह दलित नारी का हिंदी मे लिखा गया पहला आत्मकथन था। इस विशेषता के कारण उन्हें अधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी अध्ययनशीलता, संवेदनशीलता, सादगी, नम्रता, स्वाभिमानी आदि ~~अनेक~~ उनके स्वभाव के कुछ महत्वपूर्ण पहलू दिखायी देते है। उनका व्यक्तित्व पाठको के लिए प्रेरक है।

कौशल्या बैसंत्री का स्वभाव बहुत ही अच्छा था। उनके बोलने से शालीनता प्रकट होती है। वे हमेशा मुस्कुराते हुए बोलती थी। सामाजिक कार्यकर्ता का आदर्श रुप उनमे दिखायी देता था।

colors

Page No. Date :

उनका स्वभाव ~~से~~ सदैव मददगार के रुप में था। वे स्वयं गरीब परिवार से आयी है यह बात हमेशा उनके मन में थी। इसलिए उनके पास आयी हुई महिला उनसे लाभान्वित होकर ही वापस लौटती। वे आंदोलन में हमेशा आक्रमक विद्रोही तथा क्रांतिकारी थी। लेकिन कार्यकर्ता के सामने मिलनसार मानविय गुणों से मुक्त सदस्य चरित्र के रुप में रहती। गरीब, दीनदलित महिलाओं के प्रति उनमें आत्मियता थी। प्रामाणिकता, ईमानदारी, मेहनत, निस्वार्थ भाव, स्वाभिमान ये गुण उनके पास हमेशा रहे। वे स्त्रीवादी विचारधारा की प्रगतिशील महिला थी। दुसरों के प्रति उनके मन में सदैव आदर तथा अपनापन था।

colors

कौशल्या बैसंत्री का कृतित्व :-

कौशल्या बैसंत्री प्रसिद्ध दलित कथाकार, अनुवादक, लेखिका, तथा आंदोलक कार्यकर्ता थी। वे दलित तथा नारी वर्ग की समस्याओं पर लेखन करनेवाली संवेदनशील लेखिका थी। डा. बाबासाहब आंबेडकर के 'जनता' पत्रिका मे लेख तथा भाषण प्रकाशित करती थी। मद्रास के 'जयभीम दलित' मे भी सामाजिक विषयो पर लिखित थी। इसके साथ 'हंस, युद्ध, आम-आदमी' आदि मासिक पत्रों को और 'दिनमान, कथादेश' मे स्त्रीवादी कथाएं तथा नारी जागृति विषयक लेख लिखती थी। उन्होंने उर्मिला पवार मराठी की लेखिका की न्याय सहावे, बोट, बाईची जात इन कथाओं और 'आनुदान' इस आत्मकथा का हिंदी मे अनुवाद किया। किताब रुप 'दोहरा अभिशाप' इस आत्मकथा का लेखन उनके लेखिका रुप मे का महत्त्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है, क्योंकि इस लेखन से उन्हे अधिक प्रसिद्धी मिली। यह आत्मकथा दलित नारी की हिंदी मे लिखी गयी आत्मकथा है। इस आत्मकथन का कविता महाजन ने मराठी मे अनुवाद किया है। उन्होंने इसके साथ डा. आम्बेडकर, महात्मा फुले, मुक्ताबाई पर लेख लिखे है। कौसल्या बैसंत्री के पूरे साहित्यीक लेखन मे 'दोहरा अभिशाप' एक महत्वपूर्ण किताब है। कौसल्या बैसंत्री के दलित लेखिका कर्तृत्ववान महिला, कार्यकर्ता समाजसेविका आदि विशेषताओं से युक्त चरित्र निर्मिती के पिछे प्रेरणा थी भारतरत्न डा. बाबासाहब अंबेडकर इस महापुरुष की, जिनकी विचारधारा से प्रभावित होकर कौसल्या बैसंत्री ने अपने

Page No.   Date :

जीवन में आयी कठिनाइयों का सामर्थ के साथ सामना किया कौसल्या बैसंत्री जी ने विवाह के 40 साल पीड़ा और संघर्ष में बीताये। उनकी आत्मकथा पति के कारण बनी हुई उत्पीडन की संघर्षमय कथा है। उन्होंने अपना भोगा हुआ दुःख समाज के सामने रखा है। पुत्र, भाई पति या अन्य किसी की आत्मकथा लिखकर नाराज करना उनका उद्देश नहीं है। नारी वर्ग को भी स्वतंत्रता चाहिए। यह प्रमुख मांग उनके इस लेखन कार्य के पीछे है। लेखिका का जन्म महाराष्ट्र के नागपूर मे हुआ है। उनकी मातृभाषा मराठी है। लेकिन उनका बहुतांश लेखन हिंदी में है। इसका कारण एकमात्र है उनका विवाह बिहार के देवेन्द्रकुमार से होने के बाद वे दिल्ली तथा मध्यप्रदेश इस हिंदी प्रांत मे ही ही अधिक रहने के कारण अपने लेखन की माध्यम भाषा हिंदी ही स्वीकार की।

* उपन्यास के प्रमुख पात्र :-

* कौसल्या बैसंत्री :-

1) उपन्यास की नायिका - (प्रमुख स्त्री पात्र)

कौसल्या बैसंत्री 'दोहरा अभिशाप' इस उपन्यास की नायिका एवं लेखिका है। कौसल्या का जन्म सन 8 सितंबर 1926 को नागपुर की खलासी लाईन नामक बस्ती में एक गरीब एवं दलित परिवार में हुआ। माँ का नाम भागेरथी तथा पिता का नाम रामचंदेश्वर था। कौसल्या को पाँच बहने और एक भाई था। कौसल्या के बचपन में बस्ती के बड़े-बुजुर्ग उसे कचरी नाम से पुकारते थे।

colors

Page No. Date :

गरीब एवं दलित माँ की संतान-

उपन्यास की नायिका कौसल्या एक गरीब एवं दलित माँ की संतान है। माँ भागेरथी का जीवन संघर्षमय था। वह अथक परिश्रमी मेहनती और उदमशील महिला थी। घोर गरीबी और जातीय प्रताड़नाओं का सामना करते हुए उसने कौसल्या को बढ़ाया था। भागेरथी मिल-मजदूर थी। बच्चों की परवरिश ठिक ढंग से हो इसके लिए वह अनेक कष्ठ उठाती थी। छुट्टी के दिन चुड़ियाँ, कुंकुम, शिकेकाई आदि सामान बेचकर बच्चों की पढाई के लिए पैसे जुटाती थी। डा. बाबासाहेब जी के भाषण का प्रभाव अनपड भागेरथी पर पड़ चुका था। वह शिक्षा का महत्व जान गयी थी इसी कारण उसने कौसल्या को उच्चशिक्षा दिलाने का दृढनिश्चय किया था।

3) हर घर काम में कुशाल एवं अभिरूचि संपन्न :-

कौसल्या घर के हर काम में कुशल एवं अभिरूचि संपन्न थी यह कुशलता उसे अपनी माँ से विरासत में मिली थी। माँ ने कौसल्या को कपडे धोना, घर लीपना आदि सिखाया था। छुट्टी के दिन कौसल्या अपनी बहनों को साथ लेकर घर की आधी दीवार सफेद मिट्टी से और नीचे की जमीन को गोबर से लीपती थी। लेखिका के शब्दो में, मैं छोटी बाल्टी को रस्सी बाँधकर कुएँ में डालकर पानी खीचती और माँ, बडी बहन मिलकर उस पानी से कपडे धोती। सबका काम बाँटा था। माँ मिल में चली जाने के बाद लेखिका घर के सारे काम निपटाकर स्कूल चली जाती थी।

colors

Scanned with CamScanner

4) सुशिक्षित एवं बुद्धिजीवी :-

कौसल्या ने माता-पिता के सत्कार्य तथा जाईबाई की प्रेरणा से शिक्षा ग्रहण करने का निश्चय किया। अनेक समस्याओं का सामना करते हुए वह पढाई में बढती गई। लेखिका के शब्दो 'नगरपालिका के सदस्य श्री तुलाराम साखरे जीने छोटी-सी सभा और चायपार्टी का आयोजन किया। हमारी उपजाति के काफी लोग आये थे। कुछ लोगों ने हमारी प्रशंसा की और कहा की यह गर्व की बात है कि दो लडकियों ने मैट्रिक पास किया। मेरे गले में हार डाला गया। माँ भी आए थे मेरे साथ और फुले नही समा रहे थे। वे बहुत खुश थे।

बुद्धिवादी एवं प्रतिभाशाली व्यक्तिमत्व की धनी कौसल्या ने आगे चलकर बी.ए. की उपाधि हासिल की और सदियों से शिक्षा से वंचित दलितों की शैक्षिक स्थिती को उसने रेखांकित किया। छात्र अवस्था से ही वह प्रगत विचारों की कायल रही है। कौसल्या ने 12-13 उम्र में डा. बाबासाहेब आंबेडकर जी का भाषण सुना था जो उसके लिए बडा प्रेरणादायी रहा। उससे प्रभावित होकर कौसल्या ने छात्रों के मार्गदर्शन हेतू अस्पृश्य विद्यार्थी परिषद बना ली थी। विविध प्रांतो में संपन्न होनेवाले दलित अधिवेशनो में हिस्सा लेती थी।

5) अपने परिवार के प्रति समर्पित :-

कौसल्या अपने परिवार के प्रति समर्पित दिखाई देती है। चाहे वह परिवार पिता का हो या पति का। दोनो परिवारो की जिम्मेदारीयां उसने बडे समर्पण भाव से निभाई है। उसके माता-पिता ने अपने बच्चो को सुशिक्षित एवं संस्कारित बनाने के लिए अनेक कष्ट उठाएँ थे। उन कष्टो का लेखिका ने

हमेशा आदर किया और बी.ए तक की पढ़ाई पूरी करके माँ-बाप का सपना साकार किया। वह अपने भाई-बहन से भी बहुत प्रेम करती है। कौसल्या अपना पति एवं बच्चों के प्रति भी समर्पित रही है। इसी कारण वह वह चालीस साल तक अपने पति के क्रूर अत्याचार सहती है अंत: उसने बेटी, पत्नी और माँ होने का दायित्व बखूबी निभाया है।

6) माँ और आजी का प्रभाव :

लेखिका पर उनकी माँ तथा आजी के अथक मेहनती और दृढ-निश्चयी व्यक्तित्व का प्रभाव दिखाई देता है। उसकी माँ बड़ी धैर्यवान, साहसी, निडर एवं तेज बुद्धी की महिला थी। हर काम सुचारु रूप से करती है। लेखिका के शब्दों में माँ अगर पढ़ी-लिखी होती और पढ़ने का मौका मिलता तो आज जरूर इंजिनिअर होती। माँ हर काम बहुत व्यवस्थित ढंग से करती थी। माँ के बहुआयामी व्यक्तिमत्व का प्रभाव लेखिका को संपूर्ण जीवनभर दिखाई देता है। कौसल्या की आजी स्वाभिमानी महिला थी। अनमेल विवाह का शिकार बनी आजी जीवनभर संघर्ष करती है। अधेड उम्र के पति के अत्याचारों से तंग आकर बच्चों के साथ घर छोडा और स्वाभिमान के साथ अपनी लड़ाई खुद लडती रही। यहाँ तक की आजी ने अपना कफन भी स्वयं जुटा दिया था। इसी प्रभाव के फलस्वरूप ही वैवाहिक जीवन के चालीस वर्षों के बाद क्यों नहीं अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए लेखिका ने पति को त्याग दिया था।

colors

Scanned with CamScanner

Page No. Date :

7) रीति-रिवाजों के प्रति प्रेम :-

कौसल्या को अपने समाज के रिती-रिवाजो के प्रति नितांत प्रेम दिखाई देता है। अस्पृश्य समाज के लोग शिवाजी और कृष्णजी के भक्त थे। लेखिका वर्णन करती है, बस्ती के लोग श्रीकृष्ण-जन्म अष्टमी की पूजा बड़ी धूमधाम से करते थे। बाजार मे खूब सुंदर-सुंदर श्रीकृष्ण की मूर्तियाँ मिलती थी। लोग इन्हे खरीदकर लाते थे। बाबा भी सुंदर-सी मुर्ति खरीदकर लाते थे। एक-दो पहले घर आँगन की सफाई और लिपापोती हो जाती थी। घर को रंग-बिरंग कागज के फुलो और झंडियो से सजाते थे। कौसरे उपजाती के एक त्योहार के बारे में लेखिका लिखती है। जनवरी महीने मे एक त्योहार आता जिसे सिर्फ कोसरे उपजाती ही मनाती थी उसे सूर्या कहते। सूर्य की पूजा करने। वह भी आँगन म सूर्य निकलने पर सवेरे मुर्गे की बली देते थे। मुर्गे का सिर काटकर उसे दिन भर आँगन मे ही पूजा के स्थान पर टोकरी ढककर रखते थे। मुर्गा पकाकर खाते थे। शाम को मुर्गे के सिर को पकाकर प्रसाद के रूप मे खाते थे परंतु परंतु अब यह सब रस्म रिवाज बंद होगए। अब पढ़ने-लिखने पर ध्यान दे रहे है।

8) संगीत के प्रति रुझान -

कौसल्या संगीत प्रेमी थी। उनकी आवाज अच्छी थी इसलिए कॉलेज के कार्यक्रमो मे वह ग्रुप मे वंदे मातरम, जनगणमन गाती थी। कौसल्या ने स्कूल के एक नाटक मे अभिनय के साथ गाना भी गाया था। लेखिका के शब्दो मे सबने मेरे गाने और अभिनय को सराहा और मुझे एक चाँदी का मैडल मिला था। गाना सीखना चाह रही थी परंतु पैसे की तंगी और घर से संगीत स्कूल बहुत दूर होने के कारण संगीत ही सीख पाई। मन मारकर जाना पड़ा मेरी आवाज अच्छी थी। ~~मेरा~~ गाना ~~सुनकर~~ सरोद वादक अली अकबर खाँ के सरोद वादन सुनकर मे मोहित हो गयी थी

colors

Page No. Date :

1) खेल कुद में रूची-

कौसल्या को खेल कुद मे विशेष अभिरूची थी। वे स्कूल के दिनो मेंही खेल प्रतियोगिता में सहभागी होने की तीव्र इच्छा थी। बेडमिंटन खेलना उन्हें बहुत पसंद था। परंतु हीनता या किसी और वजह से आगे जाने का साहस उनमे नही होता था। कौसल्या के शब्दो मे "मैने स्कूल मे किसी कार्यक्रम जैसे खेलकूद, नाटक वगैरह में कभी भाग नही लिया। मुझसे हिनता की भावना भरी थी। परंतु मै खो-खो, कबड्डी वगैरह अच्छा खेल सकती थी। परंतु मैं आगे बढ़ने सेही डरती थी। मै अस्पृश्य हु, यह भावना मेरे मन से जाती ही नही थी।" इसी कारण कौसल्या स्कूल शुरू होने से पहले जल्दी जाकर खो-खो और बेडमिंटन खेलती थी।

Page No. Date :

निष्कर्ष :-

इस आत्मकथात्मक उपन्यास से यह निष्कर्ष होता है की शिक्षा लेना यह मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। परिस्थिती कैसी भी हो पर उसे मार्ग निकालकर कष्ट लेकर शिक्षा पूरी करनी चाहिए।

कौसल्या ~~बैसेंत्री~~ ने अपनी जाती और गरीबी से जूँजकर अपनी पढाई की और कुछ तो अलग करने का प्रयास किया। कोसल्या जी को खेल - कुद मे रुचि थी।

इसमें महत्वपूर्ण भाग यह हैं की शिक्षा यह एक मानवी जीवण का महत्वपूर्ण पहलू है।

colors

Scanned with CamScanner